International Journal of Applied Research 2023; 9(5): 16-17

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(5): 16-17
www.allresearchjournal.com
Received: 06-02-2023
Accepted: 13-03-2023

डॉ. सपना राठौर
समीक्षक एवं व्याख्याकार
(एम.ए, बी एड0, पी–एच0डी0)
महाराजा अग्रसेन हिमालयन,
गडवाल युनिवर्सिटी, उत्तराखण्ड,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. सपना राठौर
समीक्षक एवं व्याख्याकार
(एम.ए, बी एड0, पी–एच0डी0)
महाराजा अग्रसेन हिमालयन,
गडवाल युनिवर्सिटी, उत्तराखण्ड,
भारत

ऋग्वेद में आर्यों की सामाजिक स्थिति

डॉ. सपना राठौर

प्रस्तावना

वेद आर्यो की सभ्यता, संस्कृति एवं साहित्य का आदि स्त्रोत तथा उद्गम स्थान है। यह भारत की अमूल्य निधि है। मानव सभ्यता, संस्कृति एवं ज्ञान का आदि सूर्योदय वेद से ही हुआ है। भारत के धर्म, सभ्यता, संस्कृति, भाषा, साहित्य, विद्या, कला सभी के विकास एवं अभ्युदय में वेदों का सबसे महत्त्वपूर्ण अनुदान रहा है। इन सबका मूल आधार वेद को ही माना जाता है। वेद आधुनिक विज्ञान का भी उत्स है। भारतीय ज्ञान–विज्ञान की समस्त शाखायें वेद से अपना सम्बन्ध जोडकर अपने को धन्य मानती हैं।ज्ञान अनन्त है, अखण्ड है, आत्मज्योति है, वेद भी अनादि अनन्त है। वेद शब्द रूप अखण्ड ज्ञानराशि है, शब्द ब्रह्म है, अतः प्रत्यक्षब्रह्म है।

वैदिक साहित्य में हमें उन शाश्वत सत्यसिद्धान्तों के दर्शन होते हैं जो कि मानव जाति के अभ्युदय और निःश्रेयस् की प्राप्ति में हेतु हैं। ऋग्वेदकाल का सामाजिक जीवन अति महत्वपूर्ण था। उस समय समाजमें पृथक–पृथक परिवार होते थे।साथ ही आर्यों का समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों में विभक्त था। ऋग्वेद के दशम मण्डल के पुरुष सूक्त के 12वें मन्त्र में यह बतलाया गया है कि ये वर्ण परब्रह्म के अंगों से उत्पन्न हुए है–

ब्राह्मणेऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।[1]

वैदिक समाज उपलब्ध साहित्य के अनुसार विश्व का अतिप्राचीन समाज है। इस समाज के प्रति जिज्ञासा होना सर्वथा स्वाभाविक है। ऋग्वेद को आदिग्रन्थ माना है। वैदिक समाज अपनी अनेक मौलिक विशेषताओं से विभूषित है। इसमें तत्कालीन वर्णाश्रम, संस्कार, पुरुषार्थ चतुष्टय, व्यक्तित्व, परिवार, पारिवारिक आचार–विचार, विवाह, स्त्रियों की स्थिति, राजा एवं राज्य की स्थिति,दण्डनीति, न्यायनीति, कूटनीति, धर्म, शिक्षा, एवं अन्य विविध सामजिक विषयों का सहज संदर्शन हुआ है। ऋग्वेद में हमें विकसित आश्रम व्यवस्था के दर्शन होते है। आर्य ऋषियों ने ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास इन चार आश्रमों की व्यवस्था मानव जीवन के सर्वाङ्गीण विकास के लिए की गयी थी । ऋग्वेद में हमें मुख्य रूप से ब्रह्मचर्य की सुन्दर प्रशस्ति मिलती है। गुरु के समीप विद्याध्ययन के लिये आने वाले विद्यार्थी ब्रह्मचारी कहलाते थे। निम्नलिखित मन्त्रों में ब्रह्मचर्य की प्रशस्ति गायी गयी है–

आचार्ये ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी प्रजापतिः। प्रजापतिर्विराति विराडिन्द्रो भवेद्वेशी।। ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं नियच्छति। आचार्ये ब्रह्मचर्येण ब्रहाचारिणमिच्छते।। ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्। उनड्वान् ब्रह्चर्येणाश्वो घासं जिगीषति। ब्रह्चर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाध्य। इन्द्रो ह ब्रह्चर्येण देवेभ्याः स्वराभरत्।।[2]

ऋग्वेद के युग में स्त्री जाति का समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान था। ऋग्वेद में गृहणी को गृहलक्ष्मी माना गया है पत्नी के बिना पति यज्ञादि धार्मिक कार्यों में प्रवृत्त नहीं हो सकता था। पिता के घर में कन्यायें अत्यधिक स्नेह व सम्मान पाती थीं। महाकवि भवभूति ने अपने प्रसिद्ध नाटक में उत्तररामचरित में यह संकेत किया है कि स्त्रियों को वेद पढने का अधिकार था–

अस्मिन्नगस्त्यप्रमुखा प्रदेशे भूयांस उद्गीथविदो वसन्ति।
तेभ्योऽधिगन्तुं निगमान्तविद्यां वाल्मीकिपार्श्वादिह पर्यटामि।।[3]

अपने लिए योग्य पति के वरण करने में पूर्ण स्वतन्त्र थी। विवाह के पश्चात् स्त्रियों का पति के घर पर पूरा अधिकार हो जाता था। वे पति को उसके प्रत्येक कार्य में सहायता करती थीं। ऋग्वेद में आर्यों से भिन्न जातियों को दास कहा गया है। आर्यो ने इन जातियों पर विजय पाकर उनको अपने अधीन कर रखा था। वे उन्हें अपने से हीन समझते थे और उनसे अपनी सेवा करवाते थे। दास अच्छे शिल्पी थे, जो कि भव्य भवनों और प्रासादों का निर्माण करते थे।ऋग्वेद के काल में शिक्षा की अच्छी व्यवस्था थी। उस समय पठन पाठन की क्रिया मौखिक थी। गुरुजन वैदिक पाठ सुनाया करते थे जिसे वे लोग ग्रहण करते थे। संहिताएं ही अध्ययन का प्रमुख विषय थी। आर्यो का निवास स्थान प्रायः ग्रामीण क्षेत्र था। घरों को बनाने में बॉस, मिट्टी, लकडी और पत्थरों का उपयोग होता था।

आर्यजनों का भोजन सीधा–सादा और पौष्टिक होता था। ये लोग घी,दूध दही का प्रचुर प्रयोग करते थे। अनाजों में यव और चावल का प्रयोग करते थे। भोजन मे मांस का प्रयोग भी करते थे। गौयें इन्हे विशेष प्रिय थी। साथ ही इस काल में ऊन के वस्त्रों की प्रचुरता थी। सिन्धु को ऊर्णावती इसीलिए कहते थे कि वहॉ ऊनी वस्त्रों का प्राचुर्य था। तपस्वी लोग तथा ऋषिजन मृगचर्म तथा वल्कल वस्त्र भी धारण करते थे। आर्यजन आभूषणों के अत्यन्त शौकीन थे तथा स्त्रियॉ चार तरह से अपनी वेणी को सजाती थी। आर्यजनों को घुडदौड तथा रथ दौड का विशेष शौख था।

आर्यधर्म वैदिक धर्म के नाम से प्रसिद्ध है। आर्यजन वेदों को ही अपने धर्म का मूलमानते थे। वेदों मे अनेक देवताओं की स्तुति की गई है।

सन्दर्भ

1. ऋग्वेद 10/90/12
2. अथर्ववेद 11/5/16–19
3. उत्तरामचरित 2/3